



Rajneesh sharma

15 Jul 1994

12:45 AM

Saharanpur

Model: All-Dosha-Report

Order No: 121326201

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 14-15/07/1994
दिन _____: गुरु-शुक्रवार
जन्म समय _____: 00:45:00 घंटे
इष्ट _____: 48:11:51 घटी
स्थान _____: Saharanpur
राज्य _____: Uttar Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 29:58:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:33:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:19:48 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 00:25:12 घंटे
वेलान्तर _____: -00:05:47 घंटे
साम्पातिक काल _____: 19:54:53 घंटे
सूर्योदय _____: 05:28:15 घंटे
सूर्यास्त _____: 19:22:37 घंटे
दिनमान _____: 13:54:23 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वर्षा
सूर्य के अंश _____: 28:19:37 मिथुन
लग्न के अंश _____: 16:05:34 मेष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मेष - मंगल
राशि-स्वामी _____: कन्या - बुध
नक्षत्र-चरण _____: हस्त - 1
नक्षत्र स्वामी _____: चन्द्र
योग _____: परिघ
करण _____: गर
गण _____: देव
योनि _____: महिष
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मूषक
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: पू-पुरुषोत्तम
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कर्क

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1916	आषाढ़	24
पंजाबी	संवत : 2051	आषाढ़	31
बंगाली	सन् : 1401	आषाढ़	30
तमिल	संवत : 2051	आनी	31
केरल	कोल्लम : 1169	मिथुनम	31
नेपाली	संवत : 2051	आषाढ़	31
चैत्रादि	संवत : 2051	आषाढ़	शुक्ल 7
कार्तिकादि	संवत : 2051	आषाढ़	शुक्ल 7

पंचांग

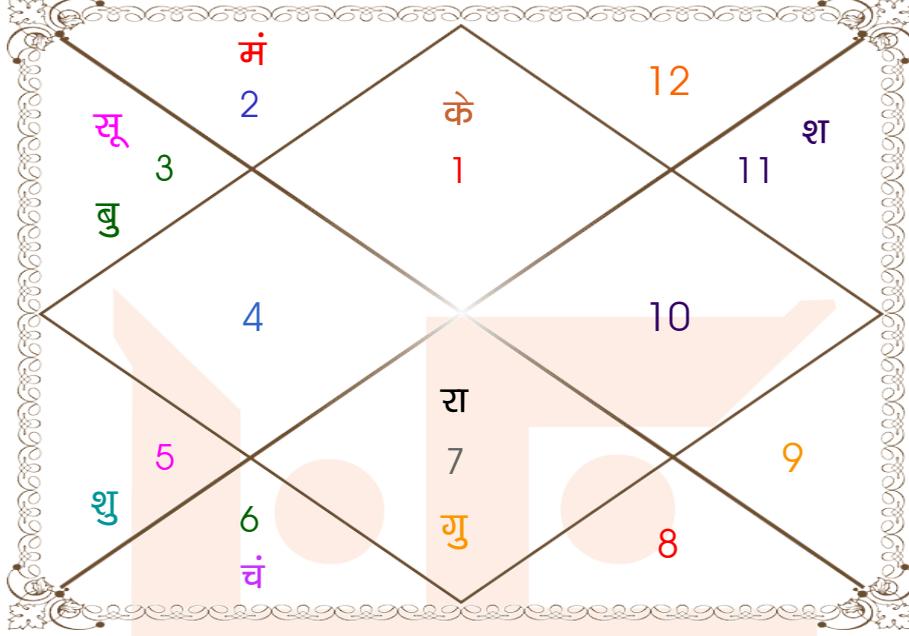
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 6
तिथि समाप्ति काल _____ : 21:37:14
जन्म तिथि _____ : 7
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : उ०फाल्गुनी
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 21:16:18 घंटे
जन्म योग _____ : हस्त
सूर्योदय कालीन योग _____ : वरियान
योग समाप्ति काल _____ : 08:02:06 घंटे
जन्म योग _____ : परिघ
सूर्योदय कालीन करण _____ : कौलव
करण समाप्ति काल _____ : 10:29:53 घंटे
जन्म करण _____ : गर
भयात _____ : 08:41:46
भभोग _____ : 57:11:15
भोग्य दशा काल _____ : चंद्र 8 वर्ष 5 मा 24 दि

घात चक्र

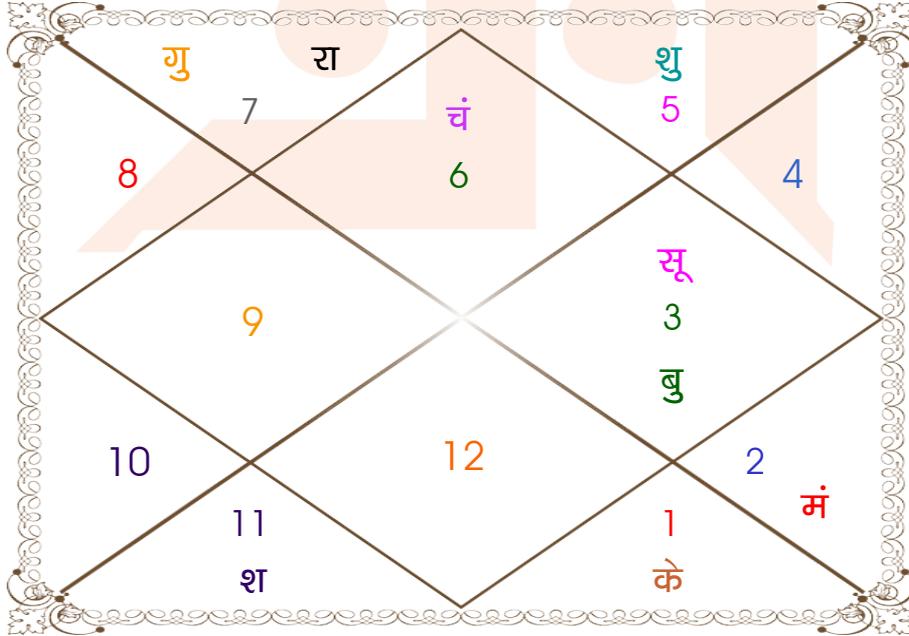
मास _____ : भाद्रपद
तिथि _____ : 5-10-15
दिन _____ : शनिवार
नक्षत्र _____ : श्रवण
योग _____ : शुक्ल
करण _____ : कौलव
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मार्जार
लग्न _____ : मीन
सूर्य _____ : मेष
चन्द्र _____ : मिथुन
मंगल _____ : वृष
बुध _____ : मीन
गुरु _____ : मिथुन
शुक्र _____ : कर्क
शनि _____ : मीन
राहु _____ : सिंह

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



Jay maa kamakhya tantra jyotish Kendra

Shamli, Uttar Pradesh 247776, India

9653182606

chauhansushil679@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

	के ल	मं	सू बु
श			
			शु
		रा गु	चं

लग्न कुंडली

मं	के ल	
बु सू		श
शु	गु रा	
चं		

विंशोत्तरी
चन्द्र 8वर्ष 5मा 24दि
चन्द्र

15/07/1994

08/01/2113

चन्द्र	08/01/2003
मंगल	07/01/2010
राहु	08/01/2028
गुरु	08/01/2044
शनि	08/01/2063
बुध	08/01/2080
केतु	08/01/2087
शुक्र	09/01/2107
सूर्य	08/01/2113

योगिनी

संकटा 6वर्ष 9मा 13दि
सिद्धा

28/04/2022

28/04/2029

सिद्धा	07/09/2023
संकटा	28/03/2025
मंगला	07/06/2025
पिंगला	27/10/2025
धान्या	29/05/2026
भामरी	09/03/2027
भद्रिका	27/02/2028
उल्का	28/04/2029

Jay maa kamakhya tantra jyotish Kendra

Shamli, Uttar Pradesh 247776, India

9653182606

chauhansushil679@gmail.com

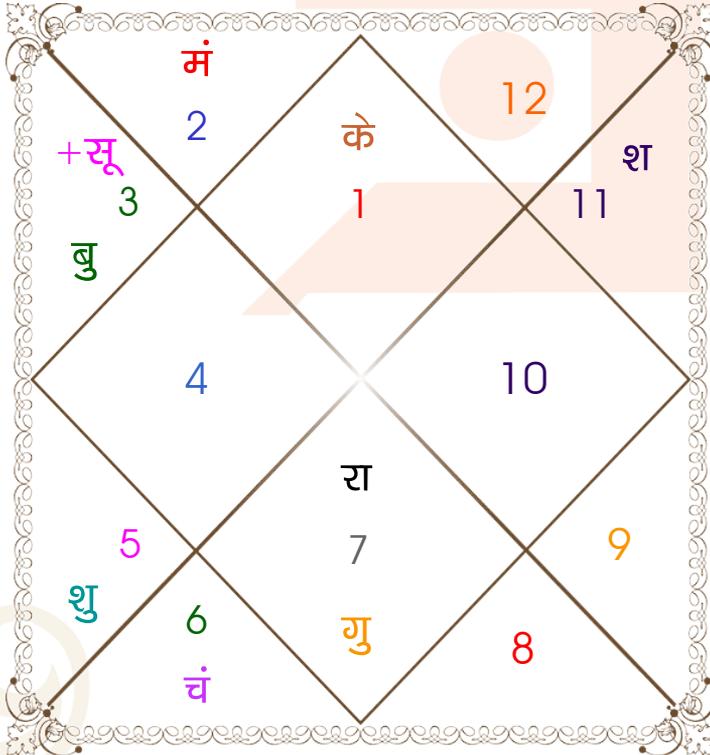
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मेष	16:05:34	459:35:51	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	सूर्य	---
सूर्य			मिथु	28:19:37	00:57:14	पुनर्वसु	3	7	बुध	गुरु	शुक्र	सम राशि
चंद्र			कन्या	12:01:12	13:56:54	हस्त	1	13	बुध	चंद्र	राहु	मित्र राशि
मंगल			वृष	13:52:07	00:41:52	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	राहु	सम राशि
बुध			मिथु	08:21:55	00:41:19	आर्द्रा	1	6	बुध	राहु	राहु	स्वराशि
गुरु			तुला	11:13:24	00:02:16	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	शत्रु राशि
शुक्र			सिंह	10:12:05	01:07:32	मघा	4	10	सूर्य	केतु	शनि	शत्रु राशि
शनि	व		कुंभ	18:14:13	00:02:05	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	चंद्र	मूलत्रिकोण
राहु	व		तुला	28:02:18	00:02:12	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	शुक्र	मित्र राशि
केतु	व		मेष	28:02:18	00:02:12	कृतिका	1	3	मंगल	सूर्य	चंद्र	मित्र राशि
हर्ष	व		मक	00:40:23	00:02:24	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	राहु	---
नेप	व		धनु	28:10:28	00:01:37	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	चंद्र	---
प्लूटो	व		वृश्चि	01:37:26	00:00:42	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	राहु	---
दशम भाव			मक	02:54:22	--	उत्तराषाढ़ा	--	21	शनि	सूर्य	गुरु	--

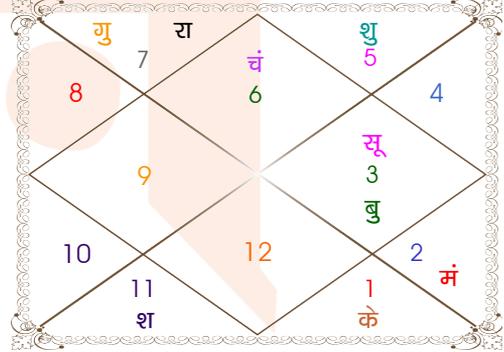
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:47:05

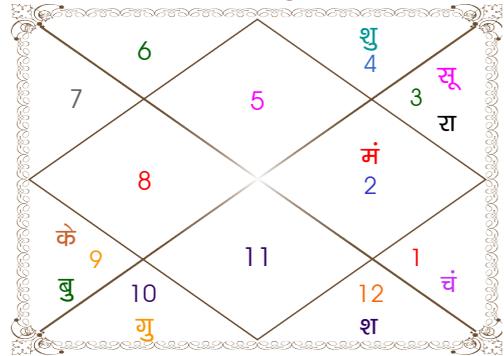
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Jay maa kamakhya tantra jyotish Kendra

Shamli, Uttar Pradesh 247776, India

9653182606

chauhansushil679@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मीन 28:53:42	मेष 16:05:34
2	मेष 28:53:42	वृष 11:41:50
3	वृष 24:29:58	मिथुन 07:18:06
4	मिथुन 20:06:14	कर्क 02:54:22
5	कर्क 20:06:14	सिंह 07:18:06
6	सिंह 24:29:58	कन्या 11:41:50
7	कन्या 28:53:42	तुला 16:05:34
8	तुला 28:53:42	वृश्चिक 11:41:50
9	वृश्चिक 24:29:58	धनु 07:18:06
10	धनु 20:06:14	मकर 02:54:22
11	मकर 20:06:14	कुम्भ 07:18:06
12	कुम्भ 24:29:58	मीन 11:41:50

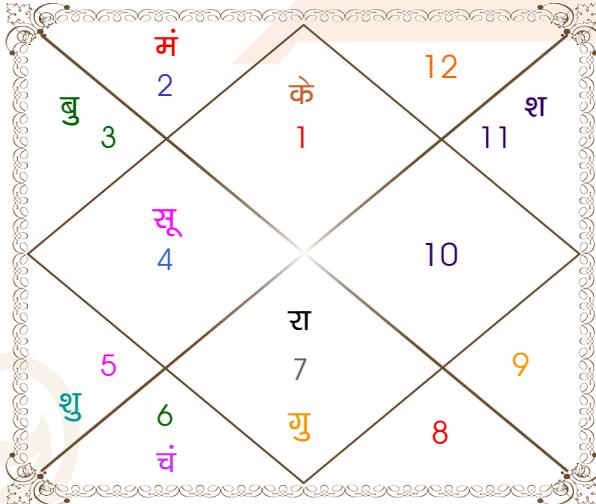
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मेष	16:05:34
2	वृष	15:31:59
3	मिथुन	09:27:45
4	कर्क	02:54:22
5	कर्क	29:56:22
6	कन्या	04:32:32
7	तुला	16:05:34
8	वृश्चिक	15:31:59
9	धनु	09:27:45
10	मकर	02:54:22
11	मकर	29:56:22
12	मीन	04:32:32

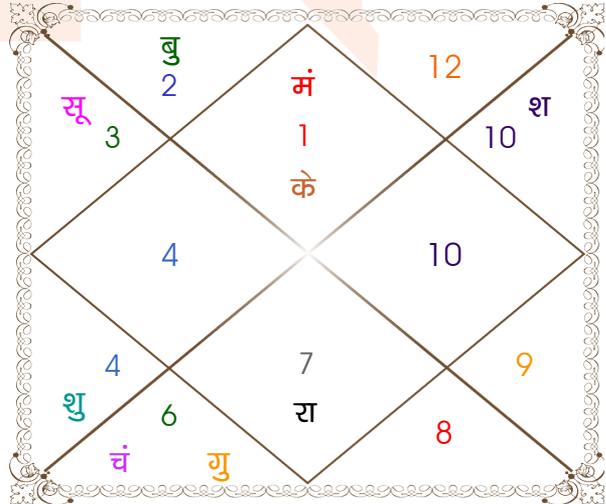
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Jay maa kamakhya tantra jyotish Kendra

Shamli, Uttar Pradesh 247776, India

9653182606

chauhansushil679@gmail.com

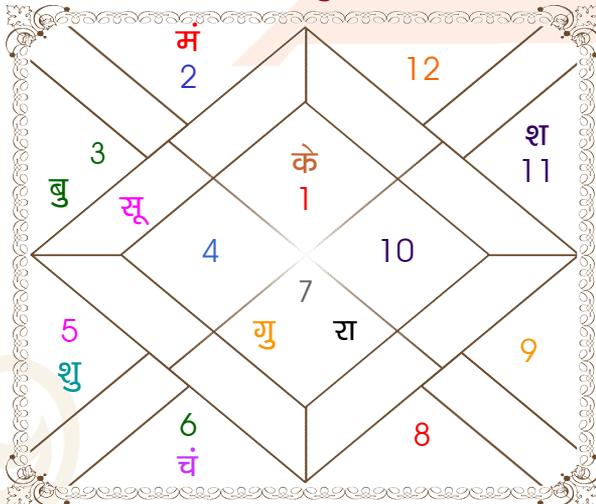
कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	कारक			अवस्था			ग्रह बल
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	
सूर्य	आत्मा	पितृ	मृत	शक्त	गमन	2.82	33 %
चंद्र	मातृ	मातृ	युवा	मुदित	नृत्यलिप्सा	3.40	72 %
मंगल	भातृ	भातृ	युवा	शान्त	उपवेशन	2.47	53 %
बुध	कलत्र	ज्ञाति	कुमार	स्वस्थ	उपवेशन	3.47	72 %
गुरु	पुत्र	धन	कुमार	खल	उपवेशन	3.26	34 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	कुमार	खल	उपवेशन	2.08	61 %
शनि	अमात्य	आयु	वृद्ध	स्वस्थ	उपवेशन	3.43	42 %
राहु	---	ज्ञान	मृत	मुदित	उपवेशन	0.00	6 %
केतु	---	मोक्ष	मृत	मुदित	गमन	0.00	6 %
कुल						20.94	

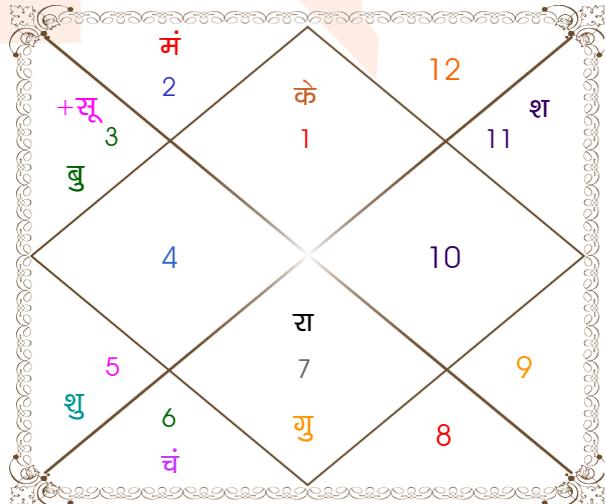
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी

चलित कुंडली



लग्न-चलित



Jay maa kamakhya tantra jyotish Kendra

Shamli, Uttar Pradesh 247776, India

9653182606

chauhansushil679@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 8 वर्ष 5 मास 24 दिन

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
15/07/1994	08/01/2003	07/01/2010	08/01/2028	08/01/2044
08/01/2003	07/01/2010	08/01/2028	08/01/2044	08/01/2063
00/00/0000	मंगल 06/06/2003	राहु 20/09/2012	गुरु 25/02/2030	शनि 11/01/2047
15/07/1994	राहु 23/06/2004	गुरु 13/02/2015	शनि 07/09/2032	बुध 20/09/2049
राहु 08/12/1995	गुरु 30/05/2005	शनि 20/12/2017	बुध 14/12/2034	केतु 30/10/2050
गुरु 08/04/1997	शनि 09/07/2006	बुध 09/07/2020	केतु 20/11/2035	शुक्र 29/12/2053
शनि 08/11/1998	बुध 06/07/2007	केतु 27/07/2021	शुक्र 21/07/2038	सूर्य 11/12/2054
बुध 08/04/2000	केतु 02/12/2007	शुक्र 27/07/2024	सूर्य 09/05/2039	चंद्र 12/07/2056
केतु 07/11/2000	शुक्र 31/01/2009	सूर्य 21/06/2025	चंद्र 07/09/2040	मंगल 20/08/2057
शुक्र 09/07/2002	सूर्य 08/06/2009	चंद्र 20/12/2026	मंगल 14/08/2041	राहु 26/06/2060
सूर्य 08/01/2003	चंद्र 07/01/2010	मंगल 08/01/2028	राहु 08/01/2044	गुरु 08/01/2063

बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष
08/01/2063	08/01/2080	08/01/2087	09/01/2107	08/01/2113
08/01/2080	08/01/2087	09/01/2107	08/01/2113	00/00/0000
बुध 05/06/2065	केतु 05/06/2080	शुक्र 09/05/2090	सूर्य 28/04/2107	चंद्र 09/11/2113
केतु 02/06/2066	शुक्र 05/08/2081	सूर्य 09/05/2091	चंद्र 28/10/2107	मंगल 10/06/2114
शुक्र 02/04/2069	सूर्य 11/12/2081	चंद्र 07/01/2093	मंगल 04/03/2108	राहु 16/07/2114
सूर्य 07/02/2070	चंद्र 12/07/2082	मंगल 09/03/2094	राहु 26/01/2109	00/00/0000
चंद्र 09/07/2071	मंगल 08/12/2082	राहु 09/03/2097	गुरु 15/11/2109	00/00/0000
मंगल 05/07/2072	राहु 27/12/2083	गुरु 08/11/2099	शनि 28/10/2110	00/00/0000
राहु 23/01/2075	गुरु 02/12/2084	शनि 09/01/2103	बुध 03/09/2111	00/00/0000
गुरु 30/04/2077	शनि 10/01/2086	बुध 09/11/2105	केतु 09/01/2112	00/00/0000
शनि 08/01/2080	बुध 08/01/2087	केतु 09/01/2107	शुक्र 08/01/2113	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 8 वर्ष 5 मा 23 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Jay maa kamakhya tantra jyotish Kendra

Shamli, Uttar Pradesh 247776, India

9653182606

chauhansushil679@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - चंद्र 21/06/2025 20/12/2026	राहु - मंगल 20/12/2026 08/01/2028	गुरु - गुरु 08/01/2028 25/02/2030	गुरु - शनि 25/02/2030 07/09/2032	गुरु - बुध 07/09/2032 14/12/2034
चंद्र 05/08/2025 मंगल 06/09/2025 राहु 27/11/2025 गुरु 08/02/2026 शनि 06/05/2026 बुध 23/07/2026 केतु 24/08/2026 शुक्र 23/11/2026 सूर्य 20/12/2026	मंगल 12/01/2027 राहु 10/03/2027 गुरु 30/04/2027 शनि 30/06/2027 बुध 23/08/2027 केतु 15/09/2027 शुक्र 18/11/2027 सूर्य 07/12/2027 चंद्र 08/01/2028	गुरु 21/04/2028 शनि 22/08/2028 बुध 11/12/2028 केतु 25/01/2029 शुक्र 04/06/2029 सूर्य 13/07/2029 चंद्र 16/09/2029 मंगल 31/10/2029 राहु 25/02/2030	शनि 22/07/2030 बुध 30/11/2030 केतु 23/01/2031 शुक्र 26/06/2031 सूर्य 11/08/2031 चंद्र 27/10/2031 मंगल 20/12/2031 राहु 07/05/2032 गुरु 07/09/2032	बुध 03/01/2033 केतु 20/02/2033 शुक्र 08/07/2033 सूर्य 18/08/2033 चंद्र 26/10/2033 मंगल 14/12/2033 राहु 17/04/2034 गुरु 05/08/2034 शनि 14/12/2034
गुरु - केतु 14/12/2034 20/11/2035	गुरु - शुक्र 20/11/2035 21/07/2038	गुरु - सूर्य 21/07/2038 09/05/2039	गुरु - चंद्र 09/05/2039 07/09/2040	गुरु - मंगल 07/09/2040 14/08/2041
केतु 03/01/2035 शुक्र 01/03/2035 सूर्य 18/03/2035 चंद्र 15/04/2035 मंगल 05/05/2035 राहु 25/06/2035 गुरु 10/08/2035 शनि 03/10/2035 बुध 20/11/2035	शुक्र 01/05/2036 सूर्य 18/06/2036 चंद्र 07/09/2036 मंगल 03/11/2036 राहु 29/03/2037 गुरु 06/08/2037 शनि 07/01/2038 बुध 25/05/2038 केतु 21/07/2038	सूर्य 05/08/2038 चंद्र 29/08/2038 मंगल 15/09/2038 राहु 29/10/2038 गुरु 07/12/2038 शनि 22/01/2039 बुध 05/03/2039 केतु 22/03/2039 शुक्र 09/05/2039	चंद्र 19/06/2039 मंगल 17/07/2039 राहु 28/09/2039 गुरु 02/12/2039 शनि 17/02/2040 बुध 26/04/2040 केतु 25/05/2040 शुक्र 14/08/2040 सूर्य 07/09/2040	मंगल 27/09/2040 राहु 17/11/2040 गुरु 02/01/2041 शनि 25/02/2041 बुध 14/04/2041 केतु 04/05/2041 शुक्र 30/06/2041 सूर्य 17/07/2041 चंद्र 14/08/2041
गुरु - राहु 14/08/2041 08/01/2044	शनि - शनि 08/01/2044 11/01/2047	शनि - बुध 11/01/2047 20/09/2049	शनि - केतु 20/09/2049 30/10/2050	शनि - शुक्र 30/10/2050 29/12/2053
राहु 24/12/2041 गुरु 20/04/2042 शनि 05/09/2042 बुध 08/01/2043 केतु 28/02/2043 शुक्र 24/07/2043 सूर्य 06/09/2043 चंद्र 18/11/2043 मंगल 08/01/2044	शनि 30/06/2044 बुध 03/12/2044 केतु 05/02/2045 शुक्र 07/08/2045 सूर्य 01/10/2045 चंद्र 31/12/2045 मंगल 05/03/2046 राहु 17/08/2046 गुरु 11/01/2047	बुध 30/05/2047 केतु 26/07/2047 शुक्र 06/01/2048 सूर्य 24/02/2048 चंद्र 16/05/2048 मंगल 13/07/2048 राहु 07/12/2048 गुरु 17/04/2049 शनि 20/09/2049	केतु 13/10/2049 शुक्र 20/12/2049 सूर्य 09/01/2050 चंद्र 12/02/2050 मंगल 07/03/2050 राहु 07/05/2050 गुरु 30/06/2050 शनि 02/09/2050 बुध 30/10/2050	शुक्र 10/05/2051 सूर्य 07/07/2051 चंद्र 12/10/2051 मंगल 18/12/2051 राहु 09/06/2052 गुरु 10/11/2052 शनि 12/05/2053 बुध 23/10/2053 केतु 29/12/2053

Jay maa kamakhya tantra jyotish Kendra

Shamli, Uttar Pradesh 247776, India

9653182606

chauhansushil679@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - सूर्य 29/12/2053 11/12/2054	शनि - चंद्र 11/12/2054 12/07/2056	शनि - मंगल 12/07/2056 20/08/2057	शनि - राहु 20/08/2057 26/06/2060	शनि - गुरु 26/06/2060 08/01/2063
सूर्य 16/01/2054 चंद्र 14/02/2054 मंगल 06/03/2054 राहु 27/04/2054 गुरु 12/06/2054 शनि 06/08/2054 बुध 24/09/2054 केतु 14/10/2054 शुक्र 11/12/2054	चंद्र 28/01/2055 मंगल 03/03/2055 राहु 29/05/2055 गुरु 14/08/2055 शनि 14/11/2055 बुध 04/02/2056 केतु 08/03/2056 शुक्र 13/06/2056 सूर्य 12/07/2056	मंगल 04/08/2056 राहु 04/10/2056 गुरु 27/11/2056 शनि 30/01/2057 बुध 28/03/2057 केतु 21/04/2057 शुक्र 27/06/2057 सूर्य 18/07/2057 चंद्र 20/08/2057	राहु 24/01/2058 गुरु 11/06/2058 शनि 23/11/2058 बुध 20/04/2059 केतु 19/06/2059 शुक्र 10/12/2059 सूर्य 31/01/2060 चंद्र 27/04/2060 मंगल 26/06/2060	गुरु 28/10/2060 शनि 23/03/2061 बुध 01/08/2061 केतु 24/09/2061 शुक्र 26/02/2062 सूर्य 13/04/2062 चंद्र 29/06/2062 मंगल 22/08/2062 राहु 08/01/2063
बुध - बुध 08/01/2063 05/06/2065	बुध - केतु 05/06/2065 02/06/2066	बुध - शुक्र 02/06/2066 02/04/2069	बुध - सूर्य 02/04/2069 07/02/2070	बुध - चंद्र 07/02/2070 09/07/2071
बुध 12/05/2063 केतु 03/07/2063 शुक्र 26/11/2063 सूर्य 09/01/2064 चंद्र 22/03/2064 मंगल 13/05/2064 राहु 22/09/2064 गुरु 17/01/2065 शनि 05/06/2065	केतु 26/06/2065 शुक्र 26/08/2065 सूर्य 13/09/2065 चंद्र 13/10/2065 मंगल 03/11/2065 राहु 28/12/2065 गुरु 14/02/2066 शनि 12/04/2066 बुध 02/06/2066	शुक्र 22/11/2066 सूर्य 13/01/2067 चंद्र 09/04/2067 मंगल 08/06/2067 राहु 11/11/2067 गुरु 28/03/2068 शनि 07/09/2068 बुध 01/02/2069 केतु 02/04/2069	सूर्य 18/04/2069 चंद्र 14/05/2069 मंगल 01/06/2069 राहु 17/07/2069 गुरु 28/08/2069 शनि 16/10/2069 बुध 29/11/2069 केतु 17/12/2069 शुक्र 07/02/2070	चंद्र 22/03/2070 मंगल 21/04/2070 राहु 08/07/2070 गुरु 15/09/2070 शनि 06/12/2070 बुध 17/02/2071 केतु 19/03/2071 शुक्र 13/06/2071 सूर्य 09/07/2071
बुध - मंगल 09/07/2071 05/07/2072	बुध - राहु 05/07/2072 23/01/2075	बुध - गुरु 23/01/2075 30/04/2077	बुध - शनि 30/04/2077 08/01/2080	केतु - केतु 08/01/2080 05/06/2080
मंगल 30/07/2071 राहु 23/09/2071 गुरु 10/11/2071 शनि 06/01/2072 बुध 27/02/2072 केतु 19/03/2072 शुक्र 18/05/2072 सूर्य 05/06/2072 चंद्र 05/07/2072	राहु 22/11/2072 गुरु 26/03/2073 शनि 21/08/2073 बुध 31/12/2073 केतु 23/02/2074 शुक्र 28/07/2074 सूर्य 13/09/2074 चंद्र 30/11/2074 मंगल 23/01/2075	गुरु 13/05/2075 शनि 21/09/2075 बुध 17/01/2076 केतु 05/03/2076 शुक्र 21/07/2076 सूर्य 31/08/2076 चंद्र 08/11/2076 मंगल 27/12/2076 राहु 30/04/2077	शनि 02/10/2077 बुध 19/02/2078 केतु 17/04/2078 शुक्र 28/09/2078 सूर्य 16/11/2078 चंद्र 06/02/2079 मंगल 04/04/2079 राहु 30/08/2079 गुरु 08/01/2080	केतु 17/01/2080 शुक्र 10/02/2080 सूर्य 18/02/2080 चंद्र 01/03/2080 मंगल 10/03/2080 राहु 01/04/2080 गुरु 21/04/2080 शनि 15/05/2080 बुध 05/06/2080

Jay maa kamakhya tantra jyotish Kendra

Shamli, Uttar Pradesh 247776, India

9653182606

chauhansushil679@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	6
भाग्यांक	9
मित्र अंक	3, 4, 6, 9
शत्रु अंक	1, 7, 8
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	गुरु, रवि, मंगल
शुभ ग्रह	गुरु, सूर्य, मंगल
मित्र राशि	वृष, मिथुन
मित्र लग्न	कर्क, धनु, कुम्भ
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

Jay maa kamakhya tantra jyotish Kendra

Shamli, Uttar Pradesh 247776, India

9653182606

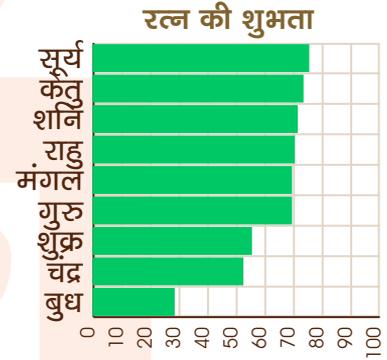
chauhansushil679@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	75%	पराक्रम, सन्तति सुख
लहसुनिया	केतु	73%	स्वास्थ्य, धन
नीलम	शनि	71%	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति
गोमेद	राहु	70%	दम्पति, सन्तति सुख
मूंगा	मंगल	69%	धन, स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव
पुखराज	गुरु	69%	दम्पति, भाग्योदय, कम खर्च
हीरा	शुक्र	55%	सन्तति सुख, धन, दम्पति
मोती	चंद्र	52%	शत्रु व रोग मुक्ति, सुख
पन्ना	बुध	28%	पराक्रम हानि, शत्रु व रोग



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	08/01/2003	81%	64%	69%	40%	69%	55%	71%	58%	61%
मंगल	07/01/2010	81%	58%	81%	3%	75%	55%	71%	58%	80%
राहु	08/01/2028	62%	28%	56%	28%	69%	61%	77%	83%	61%
गुरु	08/01/2044	81%	58%	75%	3%	81%	34%	71%	70%	73%
शनि	08/01/2063	62%	28%	56%	40%	69%	61%	83%	77%	61%
बुध	08/01/2080	81%	28%	69%	51%	69%	61%	71%	70%	73%
केतु	08/01/2087	62%	28%	75%	28%	69%	61%	58%	58%	86%
शुक्र	09/01/2107	62%	28%	69%	40%	69%	67%	77%	77%	80%
सूर्य	08/01/2113	88%	58%	75%	28%	75%	34%	58%	58%	61%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

अशुभ
सम
शुभ
शुभ
शुभ

क्षेत्र

बुरा स्वास्थ्य
सन्तति कष्ट
शत्रु व रोग
दम्पति
भाग्योदय

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति द्वितीय भाव में है। कुंडली में यह भाव मुख्य रूप से वाणी तथा कुटुम्ब का प्रतिनिधित्व करता है। अतः मंगल के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों में मतभेद का वातावरण बन सकता है। इसी कारण दक्षिण भारत में इसे कुज दोष भी माना जाता है। आपकी वाणी में भी ओजस्विता का भाव रहेगा तथा लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। धनार्जन के लिए यह स्थिति उत्तम रहेगी तथा स्वपरिश्रम एवं पराकम से आप इच्छित धन एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके पारिवारिक जनों को सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे।

कुंडली में द्वितीय भावस्थ मंगल की पंचम भाव पर दृष्टि से पुत्र संतति से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है साथ ही उच्च शिक्षा अर्जित करने में भी आप सफल रहेंगे। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा। यदा कदा पित या गर्मी से कोई परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। नवम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप अपने कार्यों एवं पराकम से भाग्य का निर्माण करेंगे। जीवन में उन्नति के पथ पर अग्रसर रहेंगे साथ ही आप भाग्य वादी न होकर कर्म करने में विश्वास रखेंगे।

इस प्रकार आप द्वितीय भावस्थ मंगल के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि को बनाएं रखेंगे तथा पारिवारिक जनों का उचित रूप से पालन करेंगे साथ ही वे भी आपको यथोचित सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे आप प्रसन्नता पूर्वक जीवन में सुखों का उपभोग करेंगे तथा एक दूसरे को सहयोग प्रदान करके

मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त करेंगे ।



Jay maa kamakhya tantra jyotish Kendra

Shamli, Uttar Pradesh 247776, India

9653182606

chauhansushil679@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में तक्षक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप साझेदारी के कामों में जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। बनते कार्यों में आंशिक रूप से रुकावटें आती हैं। पर कालान्तर में अपने आप व्यवधान हट जाता है। बड़े पद मिलने में भी थोड़ा बहुत कठिनाई आती है, पर जातक कुछ समय बाद अपने बौद्धिक बल से उस व्यवधान को समाप्त करने में सक्षम हो जाता है।

इस योग के प्रभाव से जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी आंशिक रूप में कष्टमय हो जाता है। प्रेम प्रसंग में जातक को सफलता प्राप्त करने में आंशिक व्यवधान आ जाता है और गुप्त प्रसंग से धोखा होने की संभावना रहती है। घर में सुख शान्ति का अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक शत्रुओं से घिरा रहता है। शत्रु लोग जातक के ऊपर षड्यन्त्र रचते रहते हैं पर उस षड्यन्त्र में कोई विशेष सफलता उनको नहीं मिलती है। जातक समय-समय पर गुप्त रोग से परेशान रहता है और रोग व्याधि में थोड़ा बहुत अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। पैतृक धन सम्पत्ति का मनोभिलाषित फल प्रायः जातक को नहीं मिलता है। जातक अपनी पैतृक सम्पत्ति को या तो दान कर देता है या नष्ट हो जाती है। यदि जातक किसी दूसरे को थोड़ा बहुत धन देता है तो वह धन प्रायः वापस नहीं आता। जिस कारण जातक को मानसिक परेशानी व चिन्ता थोड़ा बहुत घेरे रहती है।

इस योग के प्रभाव से जातक को सन्तान सुख का प्रायः अभाव रहता है। जातक को अपने जीवन साथी के साथ सदैव समझौते का रुख अपनाना चाहिये तभी गृहस्थ जीवन विशेष रूप से सुखी रह सकता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अद्वारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।

7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड़ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- नवम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में सूर्य और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुण्डली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के

कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़तेरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली मेष लग्न की हैं। मेष लग्न आपको प्रखरबुद्धि प्रदान कर रहा हैं। मेष राशि अग्नि तत्व, चर राशि होने के कारण आप दृढ निश्चयी व व्यवहार कुशल है। आपका अंतः तथा वाह्य मनोभाव एक से होते हैं। आप में नेताओं के गुण विद्यमान हैं, दूसरों के अधीन रहना आपको रास नहीं आता। आप जीवन में पुरुषार्थ तथा उद्यम से उन्नति कर लेते हैं। कुण्डली में मंगल, सूर्य, चन्द्र अशुभ हों, तो पिता-माता व भाई बहिनों का सुख कम प्राप्त होता है। परिवर्तनशील स्वभाव तथा शीघ्र क्रोधित होकर प्रचण्ड रूप धारण कर लेने का गुण भी आपमें पाया जाता है। अत्यधिक क्रोधावेश में कई बार आप अपनी हानि भी करवा बैठते हैं।

6, 8 व 12 भाव त्रिक भावों के नाम से जाने जाते हैं। त्रिक भावों के स्वामी व इनमें

बैठे ग्रह किसी न किसी प्रकार आपके जीवन में बाधा डालते हैं। जिसमें षष्ठ भाव से रोग, ऋण और शत्रुओं से होने वाले कष्टों का बोध होता है। इसका स्वामी जिस भाव में जाता है उसके शुभ फलों का कुछ न कुछ नाश होता है। जिससे मनुष्य को षष्ठ भाव के स्वामी की महादशा या अन्तर्दशा में रोग, ऋण और शत्रुओं के द्वारा दैहिक मानसिक, सामाजिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्टों का सामना करना पड़ता है। त्रिक भावों में अष्टम भाव सर्वाधिक दुष्ट/अशुभ माना जाने वाला स्थान है। इस भाव का स्वामी अर्थात् अष्टमेश जिस भाव में बैठता है, उस भाव के फलों का नाश करता है। अष्टम स्थान में बैठने वाले ग्रहों के फलों में पापत्व बढ़ जाता है। और अशुभ फलों में वृद्धि होती है। त्रिक भावों में तीसरा भाव द्वादश भाव है। इस भाव से अनेक प्रकार के व्यय का विचार करते हैं। इसलिए इसे व्यय भाव भी कहते हैं। यह हानि, टैक्स, निद्रा, शैय्या भोग, कारागार, विदेश यात्रा और मोक्ष स्थान है। इस भाव का स्वामी और इस भाव में स्थित ग्रह भी इस भाव से संबंधित विषयों की अशुभता में वृद्धि करते हैं।

आपके लग्न के लिए बुध विशेष अशुभ ग्रह है। क्योंकि वह षष्ठ व तृतीय भाव का स्वामी है। इसी तरह शुक्र भी द्वितीयेश व सप्तमेश होने के कारण आपके लिए मारकेश हो गए हैं। शनि दशमेश होकर शुभ मगर आयेश होकर फिर पापी हो जाता है। ये सभी ग्रह आपके लिए कष्टकारी हो सकते हैं।

इसमें छठे भाव व तीसरे भाव के स्वामी बुध हैं, षष्ठेश बुध के परिणाम स्वरूप आपके अपने सम्बन्धियों से शत्रुवत सम्बन्ध हो सकते हैं। अन्य जाति के व्यक्तियों से आपकी शीघ्र मित्रता हो सकती है। शत्रुओं की अधिकता होने से आपके मानसिक और शारीरिक कष्ट समय समय पर आपको परेशान कर सकते हैं। रोगों की अधिकता भी स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकती है। धन का व्यय रोग और शत्रु सम्बन्धी विषयों का समाधान करने पर लग सकता है, जिसके कारण आर्थिक स्थिति प्रभावित हो सकती है। शत्रुओं पर विजय प्राप्ति के लिए आपको चतुरता से काम लेना होगा। यह योग आपको अल्प पराक्रमी, भाई बहनों से मतभेद और व्ययों की अधिकता दे सकता है। इस भाव में बुध रोग, ऋण और शत्रुओं का दमन कर अनेक क्षेत्रों में सफलता देता है।

अष्टमेश मंगल दुष्टता, क्रूरता, निर्दयता और शत्रुता का प्रतिनिधि है। इसके परिणाम से आप के आत्मविश्वास भाव में वृद्धि हो रही है। आप आक्रामक रुख रखते हुए, प्रयास भाव से अपने बल पर शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। मंगल की महादशा-अन्तर्दशा में लड़ाई-झगड़े, दुर्घटना और शत्रुओं के द्वारा धन, पद, प्रतिष्ठा की हानि हो सकती है। इस दशा अवधि में मन-मस्तिष्क पर नियंत्रण, कटु वचन का त्याग और स्वयं की दुर्घटनाओं से रक्षा करनी चाहिए। आपके पुरुषार्थ से किये हुए सभी कार्य पूर्ण होंगे। परन्तु स्वास्थ्य के पक्ष से यह अनुकूल नहीं है।

द्वादश भाव व्यय का स्थान है। इस भाव में बृहस्पति की मीन राशि है। आप मोक्ष प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। द्वादश भाव से बृहस्पति का दृष्टि सम्बन्ध चतुर्थ भाव से होने से घर, जमीन-जायदाद और माता सुख की प्राप्ति होगी तथा दीर्घकालीन धन विनियोजन, विदेश स्थानों पर आपके व्ययों को बढ़ाएगा। वितीय विषयों के लिए गुरु की यह स्थिति अनुकूल नहीं

हैं।

आपकी कुंडली में चन्द्र षष्ठ भाव में स्थित हैं। इसके परिणाम से शत्रुओं से कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। आप रोग पीड़ित, चिंताग्रस्त, व्याधिक्य करने की प्रवृत्ति से ग्रस्त हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त चन्द्र की अशुभता से आपके ऋण लेन-देन में बाधाएं आ सकती हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 3, 4, 5 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। सामान्यतया मेष लग्न में उत्पन्न जातक आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होते हैं तथा उनमें पराक्रम साहस तथा तेजस्विता का भाव विद्यमान रहता है। इसके साथ ही जीवन में वे स्वपरिश्रम एवं योग्यता के बल पर उन्नति, मान-सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होते हैं। शारीरिक रूप से ये जातक स्वस्थ रहते हैं तथा कठिन से कठिन कार्य में परिश्रम पूर्वक सफलता प्राप्त करना उनके लिए आसान कार्य होता है।

अतः इस लग्न के प्रभाव से आप साहसी तथा पराक्रमी पुरुष होंगे तथा निर्भयतापूर्वक अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे सामाजिक प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि अर्जित करने में भी आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक स्वाभिमानी पुरुष होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से सम्मान जनक स्थिति में स्वयं को स्थापित करने में समर्थ होंगे।

लग्न में केतु की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा तथा यदा कदा मानसिक व्याकुलता की अनुभूति कर सकते हैं परन्तु इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप में साहस तथा तेजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा फलतः स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप किसी उच्च एवं प्रतिष्ठित पद को अर्जित करने में समर्थ होंगे जिससे समाज में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे।

आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए सर्वदा परिश्रम पूर्वक यत्नशील रहेंगे। यदा कदा आप अधिक बोलेंगे तथा अनावश्यक चंचलता का भी प्रदर्शन करेंगे परन्तु जीवन में परिश्रम पूर्वक सुख संसाधनों को अर्जित करके उनका उपभोग करने में समर्थ होंगे। कार्य क्षेत्र में व्यापार की अपेक्षा नौकरी आपके लिए अनुकूल रहेगी तथा इसमें आपको इच्छित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी परन्तु व्यापार के क्षेत्र में आपको अनावश्यक समस्याएं तथा परेशानियां हो सकती हैं। अतः यत्नपूर्वक व्यापार करने की उपेक्षा करें। इसके अतिरिक्त यदा कदा आप शारीरिक दुर्बलता की भी अनुभूति करेंगे तथा भय का भाव भी मन में केतु के प्रभाव से विद्यमान रहेगा।

इस प्रकार आप पराक्रमी, तेजस्वी, चंचल तथा साहसी व्यक्ति होंगे तथा उत्साह एवं परिश्रम पूर्वक अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करते हुए जीवन व्यतीत करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में समस्त सांसारिक सुखों तथा धनऐश्वर्य का उपभोग करने में समर्थ रहेंगे साथ ही किसी संबंधी की सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि अपने नजदीक के संबंधियों के प्रति आपके मन में हमेशा सद्भावना रहेगी तथा सुख दुख में आप उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे। बागवानी के प्रति भी आपके मन में रूचि रहेगी तथा समय समय पर आप इस रूचि का प्रदर्शन करते रहेंगे।

आपका पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा तथा शान्ति एवं आनन्द पूर्वक परिवार के मध्य आपका समय व्यतीत होगा। सामाजिक जनों के मध्य भी आप एक सम्माननीय पुरुष रहेंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप स्वभाव से उदार तथा भावुक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा मिष्टान भक्षण के प्रति आपकी तीव्र रूचि रहेगी। साथ ही अपने सम्भाषण में हमेशा मधुर शब्दों का प्रयोग करेंगे। इसके अतिरिक्त वाहन तथा बहुमूल्य रत्नों को भी आप जीवन में प्राप्त करेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है अतः जीवन में आपको स्वपरिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा ही इच्छित सुख संसाधनों एवं भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक आप उनका उपभोग करने में समर्थ होंगे। आप एक वैभवशाली व्यक्ति होंगे तथा वैभव अर्जित करने में आपको समय समय पर कठिन परिश्रम एवं पराक्रम का सामना करना पड़ सकता है परंतु अंत में आप इसे प्राप्त करेंगे तथा समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जायेंगे।

जीवन में आप को चल एवं अचल सम्पत्ति की विलम्ब से प्राप्ति होगी तथा इससे आप काफी परिश्रम से अर्जित करेंगे एवं विशेष संतुष्टि भी आपको कम ही मिलेगी। लेकिन आप प्रारंभ से ही परिश्रमी एवं पराक्रमी व्यक्ति होंगे अतः जीवन में हार कम ही मानेंगे। अतः अपने ऐश्वर्य एवं वैभव की अभिवृद्धि के लिए सदैव तत्पर रहेंगे तथा समाज में अपना स्तर बनाने में सफल होंगे।

आपका मकान सामान्य श्रेणी का होगा तथा इससे आप को विशेष संतुष्टि अल्प मात्रा में ही होगी तथापि इसको आप काफी सुन्दरतापूर्ण ढंग से सुसज्जित रखेंगे तथा इसकी सुंदरता बनाए रखने के लिए अन्य पारिवारिक जनों को भी प्रेरित करेंगे। आपका घर मध्यम श्रेणी की कालोनी में होगा तथा पड़ोसियों से भी मधुर संबंध अल्प ही होंगे परंतु सामंजस्यशील प्रवृत्ति होने के कारण सामन्जस्य स्थापित करके अपना जीवन व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त जीवन में वाहन सुख भी मध्यम रूप से ही प्राप्त होगा।

आपकी माता तेजस्वी स्वभाव की महिला होंगी तथा परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण रहेगा। आपके प्रति उनका सामान्यतया व्यवहार अनुकूल रहेगा परन्तु उनकी आप विशेष परवाह कम ही करेंगे। इससे आपके संबंधों में मधुरता के भाव की न्यूनता होगी। माता से आपको विशिष्ट सहयोग कम ही मिलेगा तथापि आप सुख में नहीं तो दुख में अवश्य उनका साथ देंगे। इस प्रकार माता का सुख एवं सानिध्य आपको अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा।

अध्ययन में आप प्रारंभ से ही विशेष रुचि अल्प मात्रा में ही रखेंगे फलतः स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा। आप कोई तकनीकी शिक्षा का प्रमाण पत्र प्राप्त कर सकते हैं। यदि शिक्षा के क्षेत्र में प्रारंभ से ही परिश्रम किया जाय तो इसमें किंचित सकारात्मक सफलता मिल सकती है।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है तथा शुक्र भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने सांसारिक तथा अन्य कार्यों को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगे। इससे आपको सफलता मिलेगी तथा अन्य लोग भी आपकी बुद्धिमता से प्रभावित होंगे। आपकी कविता, संगीत, नाट्यशास्त्र एवं साहित्यिक विषयों में विशिष्ट रुचि रहेगी तथा इन क्षेत्रों में परिश्रम पूर्वक ज्ञानार्जन करके समाज में अपना प्रभाव स्थापित करने में समर्थ होंगे। आपको रोमांटिक, साहित्य पढ़ना या लिखना विशेष अच्छा लगेगा तथा कानून आदि की पुस्तकों का भी आप अवसरानुकूल विधिपूर्वक अध्ययन करने में तत्पर होंगे फलतः सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करके वांछित मान सम्मान प्रदान करेंगे।

शुक्र की पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से आप रोमांटिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा प्रेम प्रसंगों की अधिकता रहेगी। आपके प्रेम में आदर्शवादिता का भाव अल्प होगा तथा प्रेम प्रसंग आपको मानसिक शान्ति एवं संतुष्टि प्रदान करने वाले होंगे। आप एक समय पर एक से अधिक प्रसंग प्रारंभ कर सकते हैं लेकिन इससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़े। अतः प्रेम प्रसंगों में पर्यादा अवश्य बनाएं रखें।

जीवन में सन्तति से आप युक्त होंगे तथा यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी। इसमें पुत्रों की अपेक्षा कन्याएं अधिक होंगी। आपके बच्चे बुद्धिमान गुणवान एवं योग्य होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। माता पिता के वे सामान्यतया आज्ञाकारी होंगे तथा उन्हें यथोचित सम्मान एवं आदर प्रदान करेंगे। जिससे आपके मन में शान्ति एवं सन्तुष्टि की भावना रहेगी। पिता की अपेक्षा माता से बच्चों का विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान माता से ही करवाएंगे लेकिन दोनों के प्रति सम्मान का भाव रहेगा एवं शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों को उनकी सलाह से ही करेंगे।

आपकी संतति अध्ययन में रुचिशील होगी फलतः वे उच्च शिक्षा प्राप्त करने में समर्थ होंगे। आप भी बच्चों की शिक्षा का पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा उन पर अधिक से अधिक व्यय करने में तत्पर रहेंगे। आपके बच्चे बुद्धिमान एवं व्यवहार कुशल होंगे जिससे अन्य लोग भी उनसे प्रसन्न एवं प्रभावित होंगे तथा उन्हें वांछित स्नेह तथा प्रोत्साहन देते रहेंगे। बच्चों के उत्तम कार्य कलापों से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त बच्चों से आपको सुख दुःख में हमेशा सहयोग मिलता रहेगा।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है तथा बृहस्पति भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है। सामान्यतया तुला राशि में जातक का सहयोगी प्रियवक्ता चंचल न्यायप्रिय एवं भ्रमणशील प्रवृत्ति का होता है एवं यह राशि वायु तत्व प्रधान होने के कारण स्वभाव में सौम्यता तथा गंभीरता भी बनी रहती है। बृहस्पति नैसर्गिक रूप से शुभ ग्रह है जिससे वह शिक्षित बुद्धिमान धनवान एवं विद्वान होता है एवं तुला राशि के प्रभाव से साहित्य कला के प्रति भी उसकी रुचि रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील विनम्र एवं सौम्यता की प्रतिमूर्ति होगी तथा सांसारिक कार्य कलापों को कुशलता पूर्वक सम्पन्न करेंगी। वह एक शिक्षित महिला होंगी तथा उच्च श्रेणी के साहित्य का अध्ययन करने में तत्पर रहेंगी। शिक्षा के क्षेत्र में उनका विशेष रुझान होगा एवं इसमें विशिष्ट उपलब्धियां भी अर्जित कर सकती है। वह प्रिय एवं मधुर वक्ता होंगी तथा अपनी मधुर वाणी से सबको प्रभावित करेंगी।

आपकी पत्नी गौरवर्ण की सुंदर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद भी मध्यम रहेगा वायुतत्व युक्त बृहस्पति के प्रभाव से शरीर में स्वस्थता तथा सुंदरता बनी रहेगी परन्तु आयु के साथ साथ इसमें स्थूलता का भी समावेश हो सकता है। सौंदर्य के प्रति वह पूर्ण सजग रहेंगी तथा सौन्दर्य प्रसाधनों का उपयोग करेंगी। इसके अतिरिक्त तुला राशि के प्रभाव से सुंदर वस्तुओं के प्रति संग्रह की प्रवृत्ति रहेगी।

आपका विवाह समीपस्थ वृद्ध एवं श्रेष्ठ संबंधी के द्वारा सम्पन्न होगा या किसी प्रभावशाली व्यक्ति के द्वारा भी यह कार्य हो सकता है। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम पूर्वक रहकर अपना समय व्यतीत करेंगे एक दूसरे की भावनाओं का आप पूर्ण आदर करेंगे एवं आपसी विचार विमर्श के द्वारा कोई भी महत्वपूर्ण सांसारिक कार्य सम्पन्न होगा इससे समानता का भाव बना रहेगा।

आपका ससुराल किसी श्रेष्ठ परिवार में होगा तथा वे लोग सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित होंगे। वे उच्च विचारों से युक्त होकर विद्वता के क्षेत्र में अग्रणी होंगे। उनसे भविष्य में नैतिक सहयोग अवश्य प्राप्त होगा परन्तु आर्थिक सहयोग अल्प मात्रा में मिलेगा। लेकिन आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी तथा आप उनको पितृवत सम्मान प्रदान करेंगे तथा वे भी पुत्रवत आप पर स्नेह की दृष्टि रखेंगे।

आपकी पत्नी भी सास ससुर के प्रति पूर्ण सेवा एवं श्रद्धा का भाव रखेंगी तथा सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी। सास की अपेक्षा ससुर के प्रति उनके मन में विशेष आदर तथा आज्ञाकारिता का भाव होगा। ननद एवं देवरों को भी अपने सद्व्यवहार से प्रभावित करेंगी तथा वे उनसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस प्रकार परिवार में सुख शांति बनी रहेगी।

व्यापार या महत्वपूर्ण योजनाओं में साझेदारी के लिए स्थिति उत्तम होगी तथा इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में मकर राशि स्थित है। जिसका स्वामी शनि है जो आपके कार्य क्षेत्र के लिए विशेष लाभ एवं उन्नति दायक सिद्ध होगा। मकर राशि भूमि तत्व एवं शनि वायु तत्व ग्रह है अतः इसके प्रभाव से आपके कार्य श्रमसाध्य होने के साथ साथ उसमें बुद्धिमता एवं मानसिक क्रिया की भी प्रधानता रहेगी। साथ ही आप स्वतंत्र व्यवसाय को भी प्रारम्भ कर सकते हैं।

दशम भाव में शनि की राशि के स्थिति के प्रभाव से आप वायुसेना, एअर लाइन्स, खनिज एवं खान विभाग, रासायनिक क्षेत्र, राजनीति, उद्योगों में कोई उच्चपद या उद्योगी अथवा फैक्टरी कर्मचारी, नौकरी, सन्देश वाहक, पेट्रोलियम विभाग आदि में इच्छित उन्नति एवं सफलता अर्जित कर सकते हैं। अतः यदि आप अपने कार्य क्षेत्र में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करना चाहते हैं तो उपरोक्त विभागों में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए। यदि आप ऐसा करते हैं तो आप सतत उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा किसी भी प्रकार से अनावश्यक व्यवधानों एवं समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा।

व्यापारिक क्षेत्र में आप के लिए लोहे का व्यापार, भारी उद्योग फैक्टरी पेट्रोल पम्प, शराब का व्यापार, प्रेस खेती बागवानी आदि में कार्य करने से वांछित उन्नति एवं आर्थिक सुदृढ़ता को प्राप्त कर सकते हैं। अतः यदि आप व्यापार करना चाहे तो उपरोक्त क्षेत्रों को ही अपना व्यवसाय अपनाना चाहिए क्योंकि इसमें आप बिना किसी बिध्न बाधा के उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा आर्थिक क्षेत्र में भी नवीन आयाम स्थापित करेंगे।

दशम भाव में मकर राशि के प्रभाव से आप जीवन में किसी उच्च एवं सम्मानित पद को अर्जित करने में समर्थ होंगे। कार्य क्षेत्र में आपकी प्रभुता को सभी हार्दिक रूप से स्वीकार करेंगे तथा आपके अनुकरण के लिए तत्पर होंगे। साथ ही आप किसी सार्वजनिक संस्था के सम्मानित पदाधिकारी भी हो सकते हैं जो आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि की परिचायक होगी। इसके अतिरिक्त जीवन में किसी विशिष्ट अधिकार या सम्मान को भी प्राप्त करने में समर्थ होंगे। अतः आपको परिश्रम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करने में तत्पर रहना चाहिए।

आपके पिताजी उद्योगी, परिश्रमी एवं पराक्रमी व्यक्ति होंगे तथा स्वयोग्यता एवं बुद्धिमता से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। पिता से आपको जीवन में पूर्ण सुख स्नेह एवं सहयोग की प्राप्ति होगी तथा उनके प्रभाव से आप कार्य क्षेत्र में भी विशिष्ट सफलताएं अर्जित करेंगे। आपका भी उनके प्रति पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव रहेगा। एवं उनकी आज्ञा पालन में भी तत्पर रहेंगे। साथ ही पिता की सेवा करना अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे फलतः आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी। इस प्रकार आप सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करने में सफल होंगे।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि द्वादशभाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में दशम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि में पंचम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपने सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ फलदायी नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। उसके बाद भी बहुत ज्यादा सफलता प्राप्त नहीं होगी। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पुराने चले आ रहे कार्यों को और अच्छे ढंग से चलाना चाहिए। 02 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए समय कुछ अच्छा हो रहा है। उनको अपने अधिकारियों से लाभ प्राप्त हो सकता है। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्थानान्तरण भी अनुकूल स्थान पर हो सकता है।

31 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उस समय आपको व्यापार में कुछ सफलता मिल सकती है। नवम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा। जिसके कारण बड़े अधिकारी या अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा जिसके फलस्वरूप आप कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। एकादश स्थान के राहु धनागम कराते रहेंगे। परन्तु द्वादश स्थान के शनि अनुकूल नहीं होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ नहीं होने देंगे। अचानक कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है। शारीरिक ब्याधियां दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

2 जून के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। जिसके प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होने की संभावना बन रही है। 31 अक्टूबर को गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में होगा। उस समय आप अपने बच्चे की शिक्षा पर धने खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक माहौल के लिए अच्छा योग नहीं बना रही है। आपके परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना में कमी आ सकती है। सामाजिक रूप से समय अच्छा रहेगा। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा।

सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

02 जून से चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल होगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा, जिसके फलस्वरूप परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे। आपको मित्रों का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 31 अक्टूबर के बाद संतान पक्ष के लिए समय अनुकूल हो रहा है।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। पंचमस्थ केतु के प्रभाव से संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी व्यवधान आ सकता है। लक्ष्य प्राप्ति हेतु लगातार परिश्रम करना पड़ेगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा है। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। 31 अक्टूबर को गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। यह समय गर्भाधान के लिए बहुत अच्छा रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। द्वादशस्थ शनि के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों के कारण आप अस्वस्थ रह सकते हैं। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की ज्यादा जरूरत है नहीं तो आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में अनुशासित भोजन अपनायें व लापरवाही न करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से अधिक चिंता न करें। सुबह जल्दी उठकर घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

31 अक्टूबर के बाद समय अनुकूल हो रहा है। उस समय लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी जिससे आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां दूर होना शुरू हो जाएंगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। विद्यार्थियों की अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

जिन जातकों को अभी तक नौकरी नहीं मिली है। उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। 31 अक्टूबर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी मोटी यात्राओं के साथ-साथलम्बी यात्राएं भी होंगी।

02 जून के बाद घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्म भूमि की यात्रा हो सकती है। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकीविदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र के प्रति आप का विश्वास बढ़ सकता है और घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें अथवा काला कम्बल गरीबों को दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं द्वादश में आजाएंगे। मकर राशि के राहु दशम भाव में करेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आप लापरवाह, आलसी व बीमार हो सकते हैं जिसके कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। दशमस्थ राहु के प्रभाव से अचानक कुछ ऐसे कार्य मिल सकते हैं जिससे आपको किंचित लाभ प्राप्त हो सकता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की अचानक पदोन्नति या स्थानान्तरण होने की संभावना है।

26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको कुछ आय के स्रोत मिल सकते हैं। शेयर मार्केट व सट्टा आदि के कार्यों से आप लाभान्वित हो सकते हैं। अपनी कार्य कुशलता, दक्षता एवं बौद्धिक बल पर आप अपनी समस्याओं का समाधान भी निकाल लेंगे परन्तु 26 नवम्बर के बाद गुरु एवं शनि का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आप के कार्य क्षेत्र में कुछ विरोधी भी उत्पन्न होंगे, जो आपकी उन्नति में अवरोध उत्पन्न कर सकते हैं। अतः उस समय के अंतराल में आपको बिना किसी पर विश्वास किये अपना कार्य करते रहना होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान केशनि आर्थिक मामलों में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे जिसके फलस्वरूप आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। कोई बड़ा आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। जोखिम भरे कार्यों से बचें एवं निवेश के मामले में सावधान रहें। पैसा कमाने के लिए शॉर्ट-कट न अपनाए नहीं तो नुकसान हो सकता है।

26 जून के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम का योग बन रहा है जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु हो जाएगा। दशमस्थ राहु के प्रभाव से अचानक कुछ पैसे मिल सकते हैं, जिससे आपको छोटे-मोटे कर्जों से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे, जिसमें भी आपका धन खर्च हो सकता है। 26 नवम्बर के बाद समय ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें या किसी को उधार पैसे न दें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपका पारिवारिक वातावरण अच्छा रहेगा। परिवार में एक-दूसरे प्रति भावनात्मक लगाव बना रहेगा। सब लोगों के अंदर परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगी। माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में सुख, शान्ति, समृद्धि एवं पारिवारिक उन्नति होती रहेगी। दशमस्थ राहु के प्रभाव से आपके पिता का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। आपके बच्चों के साथ आपका समन्वय मधुर होगा। आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। समाज में आपकी पद प्रतिष्ठ में वृद्धि होगी। 26 नवम्बर के बाद पारिवारिक एवं सामाजिक दोनों पक्षों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा, उस समय भी आप अपने बौद्धिक बल से घरेलू वातावरण को अनुकूल करने की नाकाम कोशिश करेंगे।

संतान

संतान के दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे को सफलता प्राप्त के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। शिक्षा के प्रति सन्तान की रुचि बनी रहेगी परन्तु आलस्य की भावना उनकी पढ़ाई में व्यवधान उत्पन्न कर सकती है।

26 जून से गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उसके बाद समय काफी अनुकूल हो जाएगा। संतान के इच्छुक दम्पतियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय है। यह समय आपके बच्चों के लिए भी अच्छा है। वे आसानी से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे। विवाह योग्य सन्तान का विवाह हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। आर्थिक स्थिति को लेकर आवश्यकता से अधिक चिंता न करें। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। नियमित व्यायाम एवं संतुलित आहार लाभप्रद रहेगा।

26 जून के बाद आपका समय कुछ अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शाकाहारी भोजन एवं योगासन के साथ-साथ व्यायाम भी करते रहें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर से प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए

आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु अस्थिरता की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है। आपको संघर्षात्मक परिस्थितियों में सफलता मिलेगी।

विद्यार्थियों के लिए 26 जून के बाद समय शुभ हो रहा है। उस समय आपको उचित सफलता प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए आपका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो सकता है। बेरोजगार जातकों को रोजगार हेतु और इन्तजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वादशस्थ शनिपर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आप परिवार सहित अपने जन्म स्थल की यात्रा करेंगे। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही 02 जून के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि से दान, पुण्य, भण्डारा इत्यादि भी करेंगे। 26 जून के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपका श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा, जिससे आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी और आप अध्यात्मिक शक्ति को प्रबल करने के लिए मन्त्र, पाठ एवं यज्ञ अनुष्ठान इत्यादि शुभ कार्य करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनिवार को काली वस्तु का दान करें।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें। बड़े-बुजुर्गों की सेवा करें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय की स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में हानि भी हो सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आलस्य बना रहेगा जिससे व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। 28 फरवरी के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने स्थिति में कुछ सुधार होगा। नौकरी के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

24 जुलाई के बाद षष्ठस्थ गुरु एवं लग्नस्थ शनि के प्रभाव से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आत्मविश्वास बनाए रखें। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं तो इच्छित लाभ नहीं मिलेगा एवं आप अपने साझेदार से भी असंतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। शनि एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आय के स्रोत प्रभावित होंगे परन्तु 28 फरवरी के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धन लाभ होगा। बड़े भाई या पिता से भी धन लाभ हो सकता है। रुके या फंसे हुए पैसे भी मिल सकते हैं। कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

24 जुलाई के बाद फिर से कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है अतः इस बात को ध्यान में रखते हुए अभी से पैसा बचाना शुरु कर दें। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें क्योंकि वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्षारम्भ मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार के सदस्य एक दूसरे का सहयोग करेंगे। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा। 28 फरवरी के बाद पुत्र व बड़े भाईयों का सहयोग

मिलेगा। गर्भाधान के लिए अच्छा समय है।

24 जुलाई के बाद सप्तम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार पर पड़ेगा। पारिवारिक अनुकूलता भी भंग हो सकती है। उस समय अपने विवेक से काम लें। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष के शुरुआत में ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानी आ सकती हैं। आप मानसिक रूप से चिंतित रह सकते हैं परन्तु 28 जुलाई के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। उनका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। संतान की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों के लिए समय काफी अनुकूल है। यदि आपके बच्चे विवाह के योग्य हैं तो उनका विवाह हो जायेगा।

24 जुलाई के बाद संतान की शिक्षा-दीक्षा या उन्नति में व्यवधान आ सकता है अतः मन को एकाग्र कर शिक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय शुभ नहीं है। उसके खान पान पर ध्यान दें नहीं तो स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। कुछ न कुछ परेशानियां होती रहेंगी। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो यह वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा नहीं है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। घी व तली हुई वस्तुओं का सेवन कम करें। 28 फरवरी के बाद स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। सकारात्मक ऊर्जा में वृद्धि होगी। रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। लग्नस्थ शनि एवं छठे स्थान के गुरु आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं। मौसमजनित बीमारियों से परेशान रह सकते हैं। कभी-कभी बीमार नहीं होने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। शारीरिक व्याधिओं को दूर करने के लिए अन्न दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः ठीक-ठाक रहेगा परन्तु विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में शिक्षा में व्यवधान आता रहेगा परन्तु 28 फरवरी के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से समय काफी अनुकूल होगा। व्यवसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

24 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को

अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगारों जातकों को रोजगार हेतु कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी विदेश यात्राएं होंगी। 28 फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। धार्मिक या तीर्थ यात्रा का भी योग बन रहा है।

24 जुलाई के बाद अचानक यात्राएं हो सकती हैं। यात्रा के दौरान सावधानी बहुत जरूरी है। शनि ग्रह का गोचर शारीरिक कष्ट दे सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वन्दता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ दान पुण्य कम ही कर पाएंगे। 28 फरवरी के बाद पंचम स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। मन्त्र जाप या साधना (ध्यान) करेंगे। गुरु के दिये गये उपदेशो का पालन करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, सन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों को दान करें। या शनि मन्त्र का जाप करें।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु नवम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गशीर्ष होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए बहुत उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। किसी नये कार्य में भाग्य आजमा सकते हैं। अचानक बहुत ज्यादा लाभ मिलेगा। कुछ प्रतिस्पर्धी अड़चनें पैदा करने की कोशिश करेंगे परन्तु षष्ठस्थ मंगल के कारण आप उन पर नियन्त्रण पा लेंगे। मार्च से अगस्त तक समय किंचित प्रभावित होगा। उस समय आपको धोखा मिल सकता है।

05 अक्टूबर से आपका समय फिर से अनुकूल हो रहा है। व्यापारिक व्यक्तियों के आय के स्रोत खुलेंगे। उच्च अधिकारियों या बड़े लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा जिससे आप कार्यों में बहुत उन्नति करेंगे। काम-काज में पत्नी का अच्छा सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में आर्थिक उन्नति होगी। इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। 29 मार्च के बाद शारीरिक व्याधि दूर करने में आपका व्यय होगा। क्योंकि गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर अंकुश लगाएं नहीं तो अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

25 अगस्त से गुरु का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलेंगे। आय के सारे मार्ग खुलेंगे। परिवार में किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी आपका धन व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से उत्तम रहेगा। घर परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से अविवाहित व्यक्तियों का विवाह होगा जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। भाई-बहन सहित पूरे परिवार का सहयोग आपको मिलता रहेगा। पत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से समाज में आपकी पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। मार्च के बाद आपका मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध खराब हो सकते हैं।

08 अगस्त के बाद द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसे भी अनुकूल बना लेंगे। 05 अक्टूबर के बाद इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। परिवार में फिर से शान्ति का वातावरण बनेगा जिसमें आपकी पत्नी की अहम भूमिका होगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चे के लिए शुभ रहेगा। आपकी संतान की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति करेंगे परन्तु पंचम भाव पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी।

यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भधान के लिए उत्तम समय है। आपका दूसरा बच्चा विवाह के है तो उसका विवाह भी हो सकता है। 29 मार्च से 25 अगस्त तक समय प्रभावित रहेगा। उसके बाद फिर अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। लग्न स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित होगी परन्तु लग्न स्थान का शनि आपको आलसी बना सकता है। 29 मार्च के बाद मौसमजनित बीमारियों से किंचित परेशान हो सकते हैं।

25 अगस्त के बाद आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। आपके अंदर शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक शान्ति बनी रहेगी। 05 अक्टूबर के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। अचानक आपको सफलता मिलेगी। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा रहेगा। उनको अपने लक्ष्य में सफलता मिलेगी। 29 मार्च के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। उस समय अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करें।

गुरु ग्रह का गोचर 25 अगस्त को फिर से अनुकूल हो रहा है। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेना चाह रहे हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है, उसमें आपको सफलता मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नवमस्थ राहु के कारण लम्बी यात्राओं के साथ-साथ छोटी यात्राएं भी होती रहेंगी। 29 मार्च के बाद विदेश यात्राएं होंगी।

08 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके अनुकूल स्थान पर नहीं होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में नवमस्थ राहु के कारण पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। 29 मार्च के बाद आपका समय और ज्यादा प्रभाविता हो रहा है। 25 अगस्त से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व शनि मन्त्र का पाठ करें।



वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि प्रथम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु नवम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं अष्टम में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

आजीविका के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान के शनि आपको आलसी बना सकते हैं। कार्य व्यवसाय में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। व्यापार में हानि या किसी से धोखा मिल सकता है। अतः इस बात का ध्यान रखें व सतर्क रहें और किसी पर भी बहुत ज्यादा विश्वास न करें। अपने आत्मविश्वास को बनाए रखें।

1 मई के बाद गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण आपको अच्छा लाभ मिलेगा। इष्ट मित्रों या सहयोगियों का सहयोग मिलेगा। साझेदारी के लिए यह समय अनुकूल है। कानून से जुड़े लोग जैसे वकील, पुलिस आदि को लाभ की संभावना बन रही है। वरिष्ठ अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे फिर भी बड़े अधिकारियों से निश्चित दूरी बनाए रखें।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष की शुरुआत अच्छी नहीं रहेगी। धनागम में कमी व मानसिक कष्ट भी हो सकता है। इस अवधि में सकारात्मक बने रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। लग्न स्थान के शनि शारीरिक व्याधि दूर करने में भी आपका व्यय करा सकते हैं। अतः अपने स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहें। 17 अप्रैल के बाद आपके संचित धन में भी कमी आ सकती है। इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है, क्योंकि अष्टम स्थान में राहु-गुरु चण्डाल योग बन रहे हैं।

01 मई के बाद गुरु का गोचर अनुकूल होने से आपके आय स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। व्यापार में उन्नति व उम्मीद से अधिक लाभ की संभावनाएं बन रही हैं। आपको मित्र व धर्मपत्नी से भी लाभ प्राप्त हो सकता है। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर पैसा खर्च हो सकता है। नई संपत्ति क्रय-विक्रय करने के लिए अभी समय अच्छा नहीं है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष की शुरुआत पारिवारिक अनुकूलता के लिए शुभ नहीं रहेगी। वैवाहिक जीवन में निष्ठावान बने रहना आपके गृहस्थ जीवन के लिए हितकारी रहेगा। आपके माता-पिता का

स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से ससुराल पक्ष के लोगों के साथ भी आपके संबंध खराब हो सकते हैं। ऐसी विपरीत स्थिति में आप अपनी सहन शक्ति को बढ़ाएं।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पत्नी के साथ समन्वय मधुर होंगे। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे जिससे जिससे समाज में आपका कद और बढ़ेगा।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। अष्टम स्थान के गुरु संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

01 मई से गुरु का गोचर अनुकूल हो रहा है। उसके बाद आपकी संतान के स्वास्थ्य में सुधार होगा। आपकी संतान अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेगी। वे परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे आपकी दूसरी सन्तान के लिए यह समय बहुत शुभ है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवर जनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद शारीरिक आरोग्यता अनुकूल होना शुरु हो जाएगी। अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए सुबह-सुबह व्यायाम या योगा करें व खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगा। सफलता प्राप्त करने हेतु आपको अथक परिश्रम की आवश्यकता है। इसलिए अपने मनोबल को बनाए रखें एवं कार्यशील रहें।

अप्रैल के बाद तकनीकी शिक्षा व व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। नवमस्थ राहु के कारण आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। आपकी सारी यात्राएं अकस्मात् ही होंगी।

अप्रैल के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ व्यवसायिक यात्रा भी होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में मानसिक द्वंदता के कारण धार्मिक कार्य कम ही कर पाएंगे। लग्नस्थ शनि एवं नवमस्थ राहु आपके सारे धार्मिक कार्य प्रभावित कर सकते हैं। पूर्व से निर्धारित कोई धार्मिक कार्य करना चाहते हैं तो वह भी निरस्त हो सकता है। 01 मई के बाद सप्तमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आप अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे या धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन करेंगे

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीबों को बेसन के लड्डू दान करें।

